आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

प्रसार शिक्षा निदेशालय
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 9 अंक : 3 नवम्बर, 2021 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

पशुपालन एक रोजगारोन्मुखी व्यवसाय

कृषि व पशुपालन भारत की अनमोल धरोहर है, मनुष्य प्राचीन काल से ही पशुओं पर निर्भर रहा है। प्राचीन समय में सोने की चिड़िया कहलाने वाले भारत में दूध व दही की नदियां बहने का उल्लेख मिलता है। भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुपालन एवं कृषि का विशेष योगदान है। देश की लगभग 70 प्रतिशत आबादी कृषि व पशुपालन पर निर्भर है। हमारा देश धार्मिक मान्यताओं के साथ–साथ अपनी संस्कृति से भी जाना एवं पहचाना जाता है, यहां पशुओं के प्रति बहुत दयाभाव है। भारत में पशुपालन एक ऐसा व्यवसाय माना जाता है, जो कभी बंद नही हो सकता। भारतीय विशेष रूप से ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार भी कृषि व पशुपालन ही है। कोरोना जैसी महामारी के समय में भी कृषि व पशुपालन व्यवसाय ने भारतीय अर्थव्यवस्था को सम्बल प्रदान किया अतः पशुपालन सामाजिक और आर्थिक समृद्धि का संवाहक रहा है। विज्ञान व नवीन तकनीकी के युग में पशुपालन व्यवसाय के तौर–तरीकों में बदलाव करने से इसको अधिक लाभकारी बनाया जा रहा है। पशुपालन गांव और घर–घर के स्वावलम्बन का एक सशक्त माध्यम है। राजस्थान जैसे रेगीस्तानी क्षेत्र में अकाल, अल्पवृष्टि या अन्य प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले नुकसान के समय पशुपालन ने किसानों व पशुपालकों को सहारा दिया है। छोटे व सीमांत किसानों के पास कुल कृषि भूमि का 30 प्रतिशत जोत है तथा इसमें से 70 प्रतिशत किसान पशुपालन सम्बन्धित व्यवसाय करते हैं। देश का अधिकांश पशुधन आर्थिक रूप से निर्धन वर्ग के पास ही है। भारत में कुल 19.91 करोड़ गाय, 10.53 करोड़ भैंस, 14.55 करोड़ बकरी, 7.61 करोड़ भेड़, 1.11 करोड़ सूअर तथा 68.88 करोड़ मुर्गी का पालन किया जा रहा है। कृषि में वार्षिक वृद्धि दर 1–2 प्रतिशत है, जबकि पशुपालन में वार्षिक वृद्धि दर 4–5 प्रतिशत है। पशुपालन व्यवसाय में ग्रामीण युवाओं को स्वरोजगार प्रदान करने तथा उनके सामाजिक एवं आर्थिक स्तर को ऊंचा उठाने की अपार संभावनाएं है। 20वीं पशु गणना के अनुसार राजस्थान में 5.68 करोड़ पशुधन है, अर्थाथ राजस्थान पशु संख्या में भारत में दूसरे स्थान पर है। राज्य में कुल 1.33 करोड़ गौवंश, 1.37 करोड़ भैंस, 79 लाख भेड़, 2 करोड़ बकरियां उपलब्ध हैं। राजस्थान राज्य देशी गौवंश में भी एक समृद्ध प्रदेश है क्योंकि यहाँ श्रेष्ठ किस्म की देशी नस्लें उपलब्ध हैं। राज्य की थारपारकर, कांकरेज, साहीवाल व राठी नस्लों की अद्भूत उत्पादन क्षमता के कारण देश विदेश में मांग बढ़ रही है। इतने बड़े पशुधन के कारण राजस्थान में पशुपालन की अपार संभावनाएं है। ग्रामीण युवा पशुपालन व्यवसाय को अपनाकर अच्छी आमदनी कर सकते हैं। बढ़ती जनसंख्या, कृषि जोत के आकार में कमी व बेरोजगारी आदि समस्याएं पशुपालन के महत्व को और बढ़ा रहे है। पशुपालन तत्कालिक एवं निरन्तर लाभ देने वाला व्यवसाय है। अनेक युवाओं, किसानों व पशुपालकों ने पशु पालन को व्यवसाय के रूप में अपनाकर इसे रोजी–रोटी का एवं आर्थिक उत्थान का साधन बनाया है। किसान, पशुपालक व युवाओं को इस व्यवसाय की क्षमताओं को पहचान कर आगे आने की जरूरत है तथा विश्वविद्यालय इसके लिए तकनीकी प्रशिक्षण व मार्गदर्शन देने के लिए सदैव तैयार है।

सभी पशुपालक एवं किसान भाइयों को
दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

कुलपति प्रो. गर्ग द्वारा विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाइयों का अवलोकन

मालवी कैटल पशु अनुसंधान केन्द्र, डग (झालावाड़)

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने 9 अक्टूबर को पशुधन अनुसंधान केन्द्र, डग, झालावाड़ का दौरा कर मालवी गौवंश के उन्नयन एवं संरक्षण हेतु विभिन्न अनुसंधान कार्यों का जायजा लिया। इस अवसर पर माननीय कालुराम जी, विधायक, डग एवं अधिष्ठाता वेटरनरी कॉलेज, नवानियां प्रो. राजीव कुमार जोशी उपस्थित रहे। कुलपति प्रो. गर्ग ने दौरे के दौरान पशु अनुसंधान केन्द्र स्थित पशुपालन डिप्लोमा कार्यक्रम, भवन, कैटल शैड का भ्रमण कर नस्ल संरक्षण एवं अनुसंधान कार्यों हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिये। प्रो. गर्ग ने बताया कि पशु अनुसंधान केन्द्र पर वैज्ञानिक तौर पर उन्नत प्रबंधन द्वारा झालावाड़ क्षेत्र की प्रमुख नस्ल मालवी गौवंश की दुग्ध उत्पादन क्षमता में बढ़ोत्तरी करके मालवी गौवंश द्वारा आमजन में कम दुग्ध उत्पादन की मिथक धारणा को तोड़ा गया, जो कि सराहनीय कार्य है। कुलपति ने पशुधन अनुसंधान केन्द्र में स्थित पशुपालन डिप्लोमा कार्यक्रम में अध्यनरत छात्र–छात्राओं को भी सम्बोधित किया। केन्द्र प्रभारी डॉ. लोकेश गौतम ने केन्द्र की गतिविधियों के बारे में जानकारी प्रदान की।

पशुधन अनुसंधान केन्द्र एवं पशु विज्ञान केन्द्र, बोजून्दा, चित्तौड़गढ़

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने 10 अक्टूबर को पशुधन अनुसंधान केन्द्र एवं पशु विज्ञान केन्द्र, बोजून्दा, चित्तौड़गढ़ का निरीक्षण व अवलोकन किया। कुलपति प्रो. गर्ग ने इन केन्द्रों के सुचारू संचालन हेतु सिरोही बकरी प्रजनन फार्म, कृषि फार्म, रोग निदान प्रयोगशाला का निरीक्षण किया एवं आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किये। कुलपति प्रो. गर्ग ने आत्मा परियोजना के अर्न्तगत केन्द्र पर संचालित दो दिवसीय वैज्ञानिक पशुपालन एवं प्रजनन शिविर के प्रशिक्षार्थियों एवं पशुपालकों को सम्बोधित किया और विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालकों के लिए संचालित की जा रही कल्याणकारी योजनाओं के बारे में बताते हुए कहा कि विश्वविद्यालय पशुपालकों के सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान हेतु निरंतर प्रयासरत रहेगा। कुलपति प्रो. गर्ग द्वारा पशु विज्ञान केन्द्र पर स्वाचालित मिल्क एनालाइजर मशीन का उद्घाटन भी किया गया। इस अवसर पर अधिष्ठाता वेटरनरी कॉलेज, नवानियां प्रो. राजीव कुमार जोशी नवानियां, उदयपुर उपस्थित रहे। पशु विज्ञान केन्द्र प्रभारी डॉ. मुकेश कुमार शर्मा एवं पशुधन अनुसंधान केन्द्र प्रभारी डॉ. मिठालाल गुर्जर ने केन्द्रों पर संचालित विभिन्न गतिविधियों से अवगत करवाया। इस दौरान डॉ. मुकेश कुमार मीणा, डॉ. आसिफ मोहम्मद, डॉ. परमजीत, डॉ. अनिल मोरदिया, डॉ. पवन कटेवा एवं अन्य कर्मचारी मौजूद रहे।

वेटरनरी कॉलेज, नवानियाँ (उदयपुर)

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने 11 अक्टूबर को पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियां, उदयपुर का निरीक्षण किया एवं शैक्षणिक, अनुसंधान एवं प्रसार कार्यक्रमों का जायजा लिया। अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, नवानियां प्रो. राजीव कुमार जोशी ने कुलपति को विभिन्न गतिविधियों की विस्तृत जानकारी दी। कुलपति प्रो. गर्ग ने सभी संकाय सदस्यों को सम्बोधित करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय पशुपालकों के हित में निरंतर प्रयासरत है एवं प्रसार शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालय ने आशातीत प्रगति की है हमें शैक्षणिक एवं अनुसंधान के क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति कर विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करना है। इसके लिए विश्वविद्यालय के सभी महाविद्यालयों में शोध कार्यों के लिए विशेष फंड आंवटित किया जाएगा। कुलपति प्रो. गर्ग ने सभी विभागों एवं इकाईयों का निरीक्षण कर उनके सुदृढ़ीकरण हेतु अपने सुझाव दिये। अकादमिक समन्वयक डॉ. एस.के. शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

पशु अनुसंधान केन्द्रों की कार्य समीक्षा बैठक

वेटरनरी विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशालय के अर्न्तगत कार्यरत पशु अनुसंधान केन्द्रों की कार्ययोजना एवं प्रगति की समीक्षा बैठक 21 अक्टूबर को कुलपति प्रो. सतीश के.गर्ग की अध्यक्षता में आयोजित की गई। कुलपति प्रो. गर्ग ने सभी प्रभारी अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि सभी केन्द्रों पर उन्नत सांडो के सीमन का उपयोग कर कृत्रिम गर्भाधान को बढ़ावा देना होगा। पशु अनुसंधान केन्द्रों पर कम उत्पादकता वाले पशुओं को समय–समय पर निलामी कर फार्मो के उत्पादन स्तर को बढ़ावा देना होगा। कुलपति ने सभी प्रभारी अधिकारियों को पशु अनुसंधान केन्द्रों पर उपलब्ध भूमि का समुचित उपयोग, पशुचारा उत्पादन को बढ़ाने, उन्नत पशुशाला प्रबन्धन द्वारा पशुओं की उत्पादकता बढ़ाने एवं विभिन्न मदों के तहत जारी बजट राशि का समुचित उपयोग करने हेतु निर्देश दिये। बैठक में कुलसचिव अजीत सिंह राजावत, वित्तनियन्त्रक डॉ. प्रताप सिंह पूनिया, अनुसंधान निदेशक प्रो. हेमन्त दाधीच सहित विश्वविद्यालय के अधिकारी मौजूद रहे।

उन्नत अनुसंधान केन्द्रों की कार्य समीक्षा बैठक

वेटरनरी विश्वविद्यालय के राज्यमद में स्थापित 10 उन्नत अनुसंधान केन्द्रों की कार्य योजना एवं प्रगति की समीक्षा बैठक 22 अक्टूबर को कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग के अध्यक्षता में आयोजित की गई। कुलपति प्रो. गर्ग ने बैठक में सभी केन्द्रों के प्रभारी अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि विभिन्न मदों के तहत जारी बजट राशि का समुचित उपयोग करें एवं प्रत्येक केन्द्र निश्चित उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए कार्य करें तथा प्रत्येक वर्ष के अन्त तक विशेष उपलब्धियों एवं कुछ ऐसी तकनीकों को विकसित करें जिसका कि अन्तिम छोर पर बैठे पशुपालकों को लाभ मिल सके तथा केन्द्रों के द्वारा विकसित तकनीकों के पेटेन्टीकरण करने, वेक्सीन निर्माण तथा रोग निदान सुविधाएं विकसित करने बाबत दिशा निर्देश दिए। विश्वविद्यालय के उन्नत अनुसंधान केन्द्रों द्वारा केन्द्रित एवं लक्ष्य आधारित अनुसंधान व तकनीकी हस्तान्तरण पर जोर दिया जायेगा। निदेशक अनुसंधान प्रो. हेमन्त दाधीच ने उन्नत अनुसंधान केन्द्रों की गतिविधियों के बारे में बताया तथा बैठक का संचालन किया।

प्रबंध मंडल की बैठक में शैक्षिक, अनुसंधान व वित्त के महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर हुई चर्चा

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रबंध मंडल की 25वीं बैठक 23 अक्टूबर को कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में राज्य सरकार द्वारा स्वीकृत नवीन महाविद्यालयों के शैक्षणिक पदों का विषयवार विभाजन, विश्वविद्यालय में उपलब्ध रिक्त पदों पर सेवानिवृत कर्मचारियों की पुनः नियुक्ति, टीचिंग एसोसियट की सेवाओं सम्बधित प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी एवं प्रभावी बनाने के साथ–साथ विश्वविद्यालय के सुदृढ़ीकरण हेतु विभिन्न महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा एवं अनुमोदन किये गये। डेयरी व खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालयों के लिए फीस का निर्धारण भी इस बैठक में किया गया। बैठक में विश्वविद्यालय की अत्याधुनिक शोध प्रयोगशालाओं के एन.ए. बी.एल. एक्रिडिटेशन पर आवश्यकता जताई गई। विश्वविद्यालय के प्लानिग बोर्ड की बैठक में दिये गये सुझावों पर मण्डल के सदस्यों ने सहमति जताई। प्रबंध मंडल के मनोनीत सदस्य खाजूवाला विधायक श्री गोविन्द मेघवाल, राजुवास के संस्थापक एवं पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत, डॉ. अमित नैण, रणजीत सिंह, श्रीमती कृष्णा सोलंकी, अशोक मोदी, पुरखाराम, डॉ. भरत सिंह, डॉ. सैयद इरशाद, डॉ. वीरेन्द्र नेत्रा, कुलसचिव अजीत सिंह राजावत, प्रो. आर.के. सिंह और प्रो. हेमंत दाधीच ने बैठक में भाग लिया।

राजुवास और आई.सी.आई.सी.आई. फाउण्डेशन के मध्य एम.ओ.यू.

वेटरनरी विश्वविद्यालय और आई.सी.आई.सी.आई. फाउण्डेशन, मुम्बई ने 27 अक्टूबर को पशुपालन क्षेत्र में युवाओं एवं किसानों के रोजगार एवं विकास हेतु आपसी सहयोग और समन्वय के लिए करार किया। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग और ऑनलाईन कान्फ्रेंस से जुड़े आई.सी.आई.सी.आई. फाउण्डेशन, सी.ई.ओ. अनुज अग्रवाल ने करार पर हस्ताक्षर किये। इस अवसर पर कुलपति प्रो. गर्ग ने कहा कि ज्ञान, कौशल एवं नवीन तकनीकों का हस्तांतरण पशुपालकों की आजीविका के आर्थिक उत्थान हेतु सहयोगी साबित होंगे। सी.ई.ओ., अनुज अग्रवाल ने कहा कि ग्रामीण विकास के एकीकृत मॉडल को क्रियान्वित किया जायेगा ताकि राज्य के किसानों को आर्थिक फायदा मिल सके। उन्होंने इस करार के माध्यम से ग्रामीण विकास के साथ–साथ, शोधार्थी छात्रों एवं उनके रोजगार हेतु बहुविकल्पों को अंजाम देने की इच्छा जाहिर की। इस अवसर पर अधिष्ठाता प्रो. आर. के. सिंह, अधिष्ठाता प्रो. राजीव जोशी, अनुसंधान निदेशक प्रो. हेमन्त दाधीच, निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक मानव संसाधन विकास प्रो. बी.एन. श्रृंगी, डॉ. शिव प्रसाद जोशी, डॉ, सुरेश झीरवाल, डॉ. राजेश नेहरा, डॉ. दीपक शर्मा, आई.सी.आई.सी.आई. फाउण्डेशन के अंचल प्रमुख संजय चौधरी, निदेशक आई.सी.आई.सी.आई. फाउण्डेशन, उदयपुर अमर दीक्षित, रीजनल प्रमुख बीकानेर विकास एवं मैनेजर राम प्रताप वर्मा आदि उपस्थित रहे।

राजुवास ई-पशुपालक चौपाल का आयोजन

भेड़ो में उचित प्रजनन से बढ़ सकती है उत्पादकता

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा राज्य स्तरीय ई पशुपालक चौपाल 27 अक्टूबर को आयोजित की गई। भेड़ों में उचित प्रजनन से बढ़ाए उत्पादकता विषय पर विशेषज्ञ डॉ. अरूण कुमार तोमर ने पशुपालकों से संवाद किया। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने चौपाल में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय ई पशुपालक चौपाल के माध्यम से पशुपालकों की समस्याओं के निराकरण के साथ–साथ वैज्ञानिक पशुपालन हेतु उन्हें प्रेरित करता है ताकि पशुपालन उनके सतत आर्थिक उत्थान का आधार बन सके। पशुपालकों को आमंत्रित विशेषज्ञों से संवाद का पूरा लाभ उठाना चाहिए। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने विषय प्रवर्तन करते हुए बताया कि जनसंख्या वृद्धि एवं जागरूकता के साथ आमजन में पशु उत्पादों की मांग में वृद्धि हुई है यदि पशुपालक स्थानीय जलवायु एवं अच्छी नस्लों को ध्यान में रखते हुए भेड़, बकरी, गाय एवं मुर्गीपालन करते हैं तो उनको निश्चित रूप से इसका फायदा मिलेगा। आंमत्रित विशेषज्ञ डॉ. अरूण कुमार तोमर, निदेशक, केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर (मालपुरा) टोंक ने भेड़ों के प्रजनन एवं प्रबंधन पर विस्तृत चर्चा करते हुए बताया कि राजस्थान की भोगौलिक स्थिति एवं जलवायु के अनुसार भेड़पालन पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद है। राजस्थान में मारवाड़ी, चोकला, मालपुरा, नाली, सोनाड़ी, मगरा, जैसलमेरी, पूगल मुख्य भेड़ों की नस्लें हैं जो कि यहां कि जलवायु के अनुरूप राज्य के अलग–अलग क्षेत्रों में पाली जाती है। भेड़ों से अधिक उत्पादन लेने हेतु इनका उन्नत प्रजनन बहुत जरूरी है। भेड़ो में संतुलित पोषण, समय–समय पर कम उत्पादकता वाले पशुओं की बिक्री एवं भेड़ों में पशु माता, एन्टरोटोक्सिमीया एवं पी.पी.आर. संक्रामक बीमारियों से बचाव हेतु समय पर टीकाकरण द्वारा रेवड को स्वस्थ एवं उत्पादक बनाये रख सकते हैं। ई–पशुपालक चौपाल में राज्यभर के पशुपालक, किसान, विश्वविद्यालय के अधिकारिक फेसबुक पेज से जुड़े।

के.वी.के. की वैज्ञानिक सलाहकार समिति बैठक

समन्वित कृषि प्रणाली से ही होगी किसानों की आय दुगुनी : कुलपति, प्रो. गर्ग

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़–II) की आठवीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति बैठक का आयोजन 25 अक्टूबर को प्रो. सतीश कुमार गर्ग, कुलपति, राजुवास, बीकानेर की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. गर्ग ने कहा कि कृषि विज्ञान केन्द्र फसल विविधीकरण पर विशेष जोर देकर क्षेत्र के किसानों की आय बढ़ाने का काम कर सकता है, साथ ही समन्वित कृषि प्रणाली को अपनाकर किसान अपनी आय दुगुनी कर सकता है। प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा ने पशुपालन को अधिक से अधिक समृद्व बनाने पर जोर दिया। प्रो. आर.पी.एस. चौहान, क्षेत्रीय निदेशक अनुसंधान, श्रीगंगानगर ने कहा कि कृषि विज्ञान केन्द्र किसानों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए प्रशिक्षण करवायें तथा प्रशिक्षण के बाद में उनका मूल्यांकन कर प्रशिक्षण के प्रभाव को प्रदर्शित करें। बैठक में श्री बलवीर खाती, उपनिदेशक (आत्मा) हनुमानगढ़, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, अटारी, जोधपुर के वैज्ञानिक डॉ. एच.एन.मीणा सहित प्रगतिशील किसान श्री लालसिंह बेनीवाल, श्री अजय स्वामी व महिला किसान पुष्पा देवी व अलीशा देवी भी उपस्थित रहें। कार्यक्रम समन्वयक, डॉ. मनोहर सैन ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर जौ फसल की उन्नत खेती के फोल्डर का विमोचन भी किया गया।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

गाढ़वाला में पशुपालकों ने सीखा वैज्ञानिक बकरी प्रबंधन

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोसिबिलिटी के तहत कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा), कृषि विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में "उन्नत बकरी पालन एवं प्रबंधन" विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम ग्राम गाढ़वाला में 20–21 अक्टूबर को आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में 30 पशुपालक शामिल हुए। प्रशिक्षण के दौरान विषय विशेषज्ञ डॉ. दीपिका धूड़िया, डॉ. मोहनलाल, डॉ. अरूण कुमार झीरवाल, डॉ. विरेन्द्र कुमार, डॉ. अमित कुमार, डॉ. मंगेश कुमार और डॉ. नरेन्द्र सिंह द्वारा वैज्ञानिक जानकारी प्रदान की गयी। प्रशिक्षण के समापन अवसर पर प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने सभी प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किये। यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोसिबिलिटी के समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन किया।

आत्मा योजनान्तर्गत जयमलसर में पशुपालकों ने जाना वैज्ञानिक बकरी पालन

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के तहत कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा), कृषि विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में "उन्नत बकरी पालन एवं प्रबंधन" विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम ग्राम जयमलसर में 22–23 अक्टूबर को आयोजित किया गया। प्रशिक्षण के दौरान बकरी पालन से लाभ, प्रमुख रोग एवं बचाव, आवास प्रबंधन, टीकाकरण, कृमिनाशन, उन्नत पोषण एवं प्रमुख नस्लों पर विषय विशेषज्ञ डॉ. दीपिका धूड़िया, डॉ. सीताराम गुप्ता, डॉ. मोहन लाल, डॉ. अरूण कुमार झीरवाल, डॉ. विरेन्द्र कुमार, डॉ. अमित कुमार और डॉ. मंगेश कुमार द्वारा महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गयी। प्रशिक्षण में 30 पशुपालक शामिल हुए। समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया –लाड़नू द्वारा 4, 8, 11, 14, 21 एवं 26 अक्टूबर को आयोजित ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 142 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 5, 8, 11, 21, 22 एवं 25 अक्टूबर को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 137 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 1, 4, 6, 8, 18, 27 एवं 28 अक्टूबर को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन एवं 11–12, 20–21 एवं 22–23 अक्टूबर को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय आफॅलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 268 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 4, 6 एवं 20 अक्टूबर को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण एवं 16–17 एवं 22–23 अक्टूबर को आत्मा योजनान्तर्गत केन्द्र परिसर तथा 11–12 एवं 25–26 अक्टूबर को आफॅ कैम्पस आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय आफॅलाइन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 281 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 4, 5, 6, 11, 12, 21, 22 एवं 23 अक्टूबर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 199 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र,सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 1, 4, 5, 6, 12, 16, 18, 20, 21, 22, 23 एवं 25 अक्टूबर को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 283 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनं द्वारा 4, 11, 18, 21, 26 एवं 28 अक्टूबर को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 150 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र,बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौडगढ़) द्वारा 6, 14 एवं 20 अक्टूबर को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण तथा 4–5, 9–10, 11–12, 22–23, 25–26 एवं 29–30 अक्टूबर को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय आफॅलाइन प्रशिक्षण शिविरों में 240 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 5, 14, 16, 18 एवं 25 अक्टूबर को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण एवं 11–12 एवं 21–22 अक्टूबर को आयोजित आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय आफॅलाइन प्रशिक्षण शिविरों में 207 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 4, 12, 18, 21, 23 एवं 26 अक्टूबर को एक दिवसीय ऑनलाइन एवं 5–6 अक्टूबर को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय आफॅलाइन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 178 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 4, 6, 8, 12, 14, 20, 23, 25 एवं 29 अक्टूबर को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 217 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 4, 8, 11, 14, 16, 20, 22 एवं 25 अक्टूबर को आयोजित ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 187 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 5, 8, 12, 16, 20, 22, 25 एवं 28 अक्टूबर को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 184 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 12 अक्टूबर को गांव चारणवासी में एवं 27 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय कृषक पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 62 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

पशुओं में घटते उत्पादन का कारण : पेट के कृमि

पशुपालक मुनाफे के लिए विभिन्न पशुओं को पालता है परन्तु कई बार अच्छा खिलाने–पिलाने के बावजूद उसे उतना मुनाफा नही हो पाता जितना होना चाहिए। इसका सबसे बड़ा कारण है पशुओं में पेट के कृमि जो पशु द्वारा खाए गये पौष्टिक भोजन को पशु तक नहीं पहुंचने देते, जिससे पशु में बिना लक्षण दिखाए दिये ही उत्पादन में कमी आने लगती है। यह बहुत चिंताजनक समस्या है क्योंकि जिस समस्या से पशु में लक्षण दिखाई देते उसे तो पशुपालक चिन्हित करके उसका समाधान कर सकता है परन्तु पेट के कृमि बिना लक्षण दिखाए पशुओं की शारीरिक क्षमता और उत्पादन घटा देते हैं। पशुओं की आंतों में पाये जाने वाले परजीवियों को सामान्यतः फीता कृमि, पर्ण कृमि एवं गोल कृमि या सूत्र कृमि कहा जाता है।

जुगाली करने वाले दुधारू पशु : गाय, भैंस, भेड़, बकरी आदि जानवर इस श्रेणी में आते हैं। हिमंकस, ऑस्टरटेजिया आदि कृमि बिना लक्षण दिखाए पशुओं को अत्याधिक नुकसान पहुंचाते है। जब ये बहुत ही बढ़ जाते है तब कुछ पशुओं में जबड़े के नीचे सूजन दिखाई देती है तथा पशु के रक्त में विभिन्न घातक बदलाव आ जाते है और पशु की उत्पादन क्षमता घट जाती है।

घोड़ा : पैराऐस्करिस इक्वोरम, ड्रेशिया मेगास्टोमा आदि परजीवी है जो घोड़ों के पेट और आंत में पाये जाते है। ये घोड़ों में दस्त, खून की कमी, खुजली आदि लक्षण उत्पन्न कर देते हैं। पाचन तंत्र को प्रमुखताः से प्रभावित करते है। घोड़ों की बढ़वार में कमी आ जाती है तथा काम करने व दौड़ने की क्षमता घट जाती है।

मुर्गीपालनः आईमेरिया, कैपिलेरिया, गोंगायलोनिमा आदि परजीवी मुर्गियों में पाये जाते हैं जो बड़ी मात्रा में नुकसान कर सकते हैं। ये कृमि मुर्गियों के पाचन तंत्र को प्रभावित कर उनका स्वास्थ्य ही नहीं खराब करते बल्कि उत्पादन को बहुत कम कर देते हैं।

कृमियों की रोकथाम व उपचार हेतु पशुपालकों को ध्यान रखने के मुख्य बिन्दु :

- साफ–सफाई का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। चारा–दाना एवं पीने का पानी साफ हो।
- समय–समय पर कृमिनाशक घोल पशुओं को पिलाना चाहिए।
- कोई भी दवा पशुओं को पशुचिकित्सक की सलाह के बिना न दी जाये।
- छोटे तथा बड़े पशुओं के अलग–अलग बाड़े हो।
- बड़े और छोटे पशु एक जगह ना चरे।
- पशुओं के बाड़े में मक्खी–मच्छर ना हो अन्यथा विभिन्न बीमारियां फैलने का डर रहता है।
- नमी के वातावरण में कृमि ज्यादा पनपते है और पशुओं को नुकसान पहुंचाते है। ऐसी जगहों पर अत्याधिक स्वच्छता की आवश्यकता है।

डॉ. रूचि मान एवं डॉ. प्रवीण पिलानियां
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।

निरोगी पशुपालन के महत्वपूर्ण सिद्धांत

पशुओं में अधिक दूध उत्पादन व प्रजनन क्षमता के लिए जरूरी है कि पशु का स्वास्थ्य अच्छा रहे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए पशुओं को अच्छा सन्तुलित आहार समय पर उत्पादन के अनुसार मिलता रहे। इसके साथ ही पशुपालक को पशु स्वास्थ्य के बारे में सही जानकारी होना अत्यन्त आवश्यक है, ताकि समय रहते पशुचिकित्सक की सलाह अनुसार उपचार करवाया जा सके।

स्वस्थ पशु के लक्षणः

- ❖ स्वस्थ पशु चुस्त व प्रसन्नचित दिखाई देता है।
- ❖ स्वस्थ पशु को पूरी भूख लगती है और पशु पेट भरकर चारा व दाना खाता है और अच्छी तरह से पानी पीता है।
- ❖ पशु अच्छी प्रकार से जुगाली करता है।
- ❖ स्वस्थ पशु की आंखे चमकीली होती है।
- ❖ पशु के कान खड़े व चलने–फिरने में चुस्त होता है।
- ❖ पशु की श्वांस गति व तापमान सामान्य रहता है।
- ❖ स्वस्थ पशु की थूथनी गीली होनी चाहिए।
- ❖ पशु ठीक प्रकार से गोबर और मल–मूत्र करता है।
- ❖ दूध देने वाला पशु ठीक प्रकार से दूध देता है।

अस्वस्थ व रोगी पशु के लक्षणः

- ❖ अस्वस्थ पशु सुस्त एवं उदास दिखाई देता है तथा पशु कम खाता है या बिल्कुल खाना बंद कर देगा।
- ❖ पशु जुगाली करना बंद कर देता है तथा थूथनी सूख जाती है।
- ❖ रोगी पशु का तापमान व श्वांस गति सामान्य से अधिक या कम होती है।
- ❖ पशु का पेट खराब होने या पेट में कीड़े के कारण गोबर पतला हो जायेगा। गोबर व मल–मूत्र में परिवर्तन आ जाता है।
- ❖ रोगी पशु के नाक व मुंह से पानी चलने लग जाता है।
- ❖ पशु के पेट में अधिक गैस या आफरा हो जाता है।
- ❖ दूध देने वाला रोगी पशु दूध कम या दूध देना बंद कर देगा।

पशु के बीमार होने से बचाने हेतु उपायः

- ➢ पशुओं को रखने का स्थान यथासंभव सूखा रहे व आसपास पानी का जमाव न हो। पशुशाला के आसपास मक्खी, मच्छर, कीट इत्यादि पैदा नहीं हो इसके लिए कीटनाशक छिड़काव करें।
- ➢ पशुओं को उनकी उत्पादन व कार्य क्षमता अनुसार सन्तुलित आहार मिलता रहे।
- ➢ संक्रामक रोगों से बचाव हेतु सक्रंमित पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग बांध कर रखे एवं इन्हें चरने के लिए चारागाह न भेजें।
- ➢ बीमार पशु के खाने–पीने के बर्तन अलग रखे। स्वच्छ जल एवं संतुलित आहार का नियमित प्रयोग करें।
- ➢ पशु के घाव होने पर पशु का तुरन्त प्राथमिक उपचार करावें, ताकि संक्रमण शरीर में न फैलें। पशु के रक्त, मल–मूत्र स्त्राव इत्यादि की नियमित जांच प्रयोगशाला से करावें।
- ➢ नियमित रूप से अन्तः एवं बाह्य परजीवी नाशक दवाइयों का प्रयोग पशुचिकित्सक की सलाह पर करें।
- ➢ पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाव हेतु महत्वपूर्ण टीकाकरण सही समय पर करवा लेवें।
- ➢ महामारी की स्थिति में एवं संक्रमित रोग से मृत पशु का निस्तारण जलाकर अथवा गहरा गड्डा खोद कर व नमक/चूने का प्रयोग कर गाड़ने की विधि द्वारा करना सुनिश्चित करें।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–नवम्बर, 2021

पशु रोग	पशु प्रकार	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम संभावना	बहुत कम संभावना
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	–	अजमेर, बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर, जयपुर, जैसलमेर, जालौर, जोधपुर, नागौर, पाली, सीकर, टोंक, उदयपुर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	टोंक	–	–	–
खुरपका मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	उदयपुर	–	–	अलवर, बारां, भरतपुर, बीकानेर, बूंदी, चित्तौड़गढ़, दौसा, धोलपुर,डुंगरपुर, जयपुर, जालोर, झालावाड़, झुंझुनू, करौली, पाली, प्रतापगढ़, राजसमन्द, सवाई माधोपुर, सिरोही
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	–	–	जयपुर	बारां, बाड़मेर, भीलवाड़ा, बूंदी, दौसा, डुंगरपुर, झालावाड़, जोधपुर, पाली, उदयपुर
पी.पी.आर.	बकरी	चूरू, उदयपुर	–	–	बाड़मेर, बीकानेर, जैसलमेर, जालोर, हनुमानगढ़, प्रतापगढ़, टोंक
थायलेरियोसिस	गाय, भैंस	उदयपुर	–	–	–
ट्रीपनोसोमिओसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	–	–	–	अलवर, भरतपुर, बीकानेर, बूंदी, धोलपुर, कोटा, राजसमन्द, सीकर, सिरोही, उदयपुर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. आर.के.सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, एवं डॉ. जे.पी. कच्छावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन नं0 0151–2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

साहीवाल गाय से आमदनी ले रहें हैं सिरोही के जयंतीलाल

ग्राम पंचायत, कैलाश नगर, तहसील शिवगंज जिला सिरोही के निवासी जंयतीलाल पुत्र श्री चतराराम ने 2018 में छोटे स्तर पर डेयरी व्यवसाय की शुरूआत की। वर्तमान में इनके पास कुल 17 छोटे और बड़े पशु है, जिसमें 10 साहीवाल नस्ल की गाय व 7 छोटी बछड़िया है। पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही के वैज्ञानिकों की सलाह से साहीवाल नस्ल की गाय व छोटी बछड़ियों का वैज्ञानिक तरीके से पालन कर रहें हैं। जंयतीलाल परंपरागत तरीके से इलाज के विभिन्न तरीके भी काम में लेते रहते है। पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही के वैज्ञानिकों की सलाह के अनुसार इन्होनें पशु बाड़े के पास छोटी सी बंजर भूमि पर लिलन व नेपियर घास लगा रखी है, जिससे इनके पशुओं के लिए हरे चारे की उपलब्धता वर्षभर बनी रहती है। जंयतीलाल इन पशुओं से प्रतिदिन 50–60 लीटर दूध का उत्पादन प्राप्त कर 2600 से 2800 रूपये प्रतिदिन कमा लेते हैं, तथा पशुपालन से इनकी सालाना 2.0 लाख से 2.5 लाख रू. तक की आमदनी हो जाती है। जंयतीलाल का कहना है कि अगर पशुपालन को वैज्ञानिक तरीके तथा पशुचिकित्सक या पशु वैज्ञानिकों के लगातार संपर्क में रहकर देखभाल किया जाये तो ज्यादा मुनाफा कमाया जा सकता है। इनका कहना है कि अगर पशुपालन युवा पशुपालक करते है तो वह इस नई तकनीक के माध्यम से पशुपालन के नए–नए आयाम, नई तकनीक को मोबाइल के माध्यम से देखकर सुनकर कर सकते हैं। जंयतीलाल पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा समय–समय पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेकर संतुलित पशु आहार, टीकाकरण, कर्मी नाशक औषधि, खनिज लवण, नेपियर घास एवं पशुपालन से संबधित नई तकनीकों के बारे में विचार–विमर्श कर वैज्ञानिक तौर–तरीके अपनाते रहते है। जंयतीलाल पशुपालक के रूप में युवा पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत है।

सम्पर्क- जंयतीलाल, ग्राम पंचायत, कैलाश नगर, तहसील शिवगंज जिला सिरोही (मो. 9928274801)

निदेशक की कलम से...

सर्दियों में पशुओं की उचित देखभाल जरूरी

राजस्थान की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में पशुपालन का विशेष महत्व है। पशुपालन न केवल जीविकोपार्जन का आधार है, बल्कि यह रोजगार व आय प्राप्ति का सुदृढ़ व सहज स्त्रोत भी है। अतः पशुओं की मौसम के अनुसार उचित देखभाल की आवश्यकता होती है। वर्तमान में हल्की–हल्की सर्दी का आगाज हो चुका है तथा पशुओं के लिए सर्दी का मौसम अच्छा माना जाता है, क्योंकि सर्दी में पशुपालक पशुओं को अच्छा पोषण देकर पोषक तत्वों की कमी को पूरा करते हैं। सर्दी के मौसम में पशु के खान–पान पर विशेष ध्यान देना चाहिए, क्योंकि सर्दी के मौसम में पशुओं के शारीरिक तापक्रम को बनाये रखने के लिए अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है। अतः पशुओं को सुखे चारे के साथ–साथ हरा चारा व दाना–बांटा आवश्यकतानुसार देना चाहिए। भोजन में गुड़, चापड़, खल चूरी को अवश्य शामिल करें। पशुओं को शीतलहर से बचाने के लिए पशुशाला की खिड़कियों व रोशनदानों पर टाट–बोरी से अच्छी तरह से ढक देना चाहिए। नवजात पशुओं को रात्रि में पक्के फर्श पर टाट के बोरे में धान या फूस की पुआल पर बैठाना चाहिए। सर्दी के मौसम में थोड़ी सी लापरवाही से काफी नुकसान उठाना पड़ सकता है, क्योंकि पशु के सर्दी के चपेट में आने पर स्वास्थ्य के साथ–साथ दूध उत्पादन पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। खुले में पशुओं को धूप में ही बांधना चाहिए। सर्दी में पशु बाड़े में से गोबर व मूत्र निकास की उचित व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि फर्श गिला न रहें व पशुओं को बैठने हेतु साफ–सुथरी सूखी जगह मिल सके। पशुओं को हमेशा साफ व ताजा पानी ही पिलायें तथा हर पशु को लगभग 30–50 ग्राम तक नमक जरूर खिलायें। पशुओं के टीकाकरण का भी ध्यान रखें। सर्दी शुरू होने पर खुरपका–मूंहपका रोग का टीकाकरण अवश्य करवाना चाहिए। अतः सर्दी के मौसम में पशुओं की उचित देखभाल व प्रबंधन से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

RAJUVAS
e-पशुपालक चौपाल
।।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।।

माह के प्रत्येक द्वितीय एवं चतुर्थ बुधवार को
समय : दोपहर 12.00 बजे से 1.00 बजे तक
राजुवास के आधिकारिक फेसबुक पेज से सीधा प्रसारण
LIVE https://www.facebook.com/RAJUVASOfficialWebPage

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

"धीणे री बात्यां"
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया